

१

९

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ द्वा गराह ते र
 हः राहुं नक्षत्रं जीवपक्ष जे जा निने पक्ष
 रहे मृत्युपक्षो करत गल नमे हनुमि ॥ रा
 हरि दक्ष मुष हो रहे ॥ १० ॥ शुद्ध अंग ॥ जो
 पद्या नको इक रहे हो न स गार मे अंग ॥
 मृत्युपक्ष को ही रं वि जीव पक्ष रहे वं
 ॥ ११ ॥ जाइ न नै पाइ है सिधु कर्मि

जे लोको तथाल्लसो धर्यै ॥ समेत
 पावयेत की कचंद्र तुम दै ॥ विषे
 समेत होत हे वंता हिको धर्यै ॥
 समेत सो निजी वप दै लिखा हा
 महें वरें कसर्हि दिव्हि कर्जिं वही
 पितृदह ॥ अथ पशि राह चक्र नर ॥
 दिव्यो ज्ञान की वारु सच चक्र वि

करि मंदा ॥ धादा ॥ शशाक म्हा रुप द्वा के
दिने स जीव म्हा जगे प गाने क त्ही म
लोह ॥ लो धिनि न ह जगे ॥ दिने स
चंद्र जीव पक्ष होइ सो लो न आ प ने
व सो दिने संक जाइ के विदारिस
नु सो लोने ॥ कहा पिनु रुप द्वा के दि
ने स चंद्र जीव स करे जो जगे न ताहि

धर्मसर्वार्थसुखं चंद्रोदयः लसति इव
 प्रकाशं रम्यं गङ्गा ललितम् ॥ उवाच
 तस्मात्तु द्विधा वर्तते स सिद्धं तं रा
 हुगजावतः ॥ सा सिद्धिर्द्विधा ॥ ३ ॥
 ताहिरसं कर्मफलं द्विधा ॥ ३ ॥
 तस्य ॥ ३ ॥ अतः तां जं रजिः सुनि
 रजो वातं चंद्रोदयः लसति इव

॥ ३ ॥

अ॥ हिमि वाक् वलिय के हा च ऊहै न
ठिक हन पति राहु ॥ बरि स पिका
मनो न उरु को उमे दाने हा नु अंद
जोग ते विचार सारु को है ॥ ६॥ बरि स
गि आदि दे दिने स चंद्र मा रहै ॥ स मा
वें जुं ऊं ऊं नि बं क रु क जाइ जै ल है ॥
बरि स गे स चंद्र जाइ जै ल है ॥

जो मय रे ते मय रे न मय पुर मंग मय वे
वि न ज मय रे ॥ कवित ॥ ते इ स बो द ह
पं व ग बो वि ना रि न ते का ल को व न ॥
ह वै ॥ दो ॥ इ स म य र ह ॥ व न स बो रि प
का ल के दा ह ते म इ न ज वै ॥ जो क व ह
म य प य र ॥ जो क हो ते हि का ल ते के
न व बो वै ॥ जो म य र म य र म य र ॥

5